CHAPTER 13,पथिक

PAGE 143, प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:1

1. पथिक का मन कहाँ विचरना चाहता है?

उत्तर : पथिक का मन बादलों पर बैठकर सारा नील गगन घूमना और लहरों पे बैठकर समुन्द्र का कोना-कोना देखना चाहता है।

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:2

2. सूर्योदय वर्णन के लिए किस तरह के बिंबों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर : सूर्योदय वर्णन के लिए निम्न तरह के बिंबों का प्रयोग हुआ है-

1. समुद्र तल से उगते हुए सूर्य का अधूरा बिंब अपनी प्रातःकालीन आभा के कारण बहुत ही मनोहर दिखाई देता

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

है और उसे देखकर ऐसा महसूस होता है जैसे वह मंदिर का कंगूरा हो।

2. समुद्र में फैली लाली मानो लक्ष्मी का मंदिर है।
3. एक अन्य बिंब में वह सूर्य की रश्मियों से बनी चौड़ी उजली रेखा मानो लक्ष्मी के स्वागत के लिए बनाई गई सुनहरी सड़क है।

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:3

आशय स्पष्ट करें -

(क) **सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।**
तट पर खड़ा गगन-गंगा के मधुर गीत गाता है।।

(ख) **कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल है यह प्रेम-कहानी।**
जी में है अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।।

उत्तर :

(क) प्रस्तुत पंक्तियों द्‌वारा कवि ने रात्रि सौंदर्य का वर्णन किया है। कवि कहता है कि जब रात को अंधेरा होने के बाद तारे आकाश में सजाए जाते हैं तो दुनिया के स्वामी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मंद-मंद मुस्कुराते हुए तट पर खड़े होकर आकाश-गंगा के मधुर गीत गाते है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति प्रकृति सौंदर्य की प्रेम कहानी को संदर्भित करती है। कवि कहता है कि समुद्र तट की प्रकृति के दृश्य इतने सुंदर हैं जैसे कि प्रेम कहानी चल रही है और कवि इस कहानी को अपने शब्दों में व्यक्त करना चाहता है। कवि प्रकृति की सुंदरता का आनंद दुनिया के साथ साझा करना चाहता है।

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविताकेसाथ:4

4. कविता में कई स्थानों पर प्रकृति को मनुष्य के रूप में देखा गया है। ऐसे उदाहरणों का भाव स्पष्ट करते हुए लिखें।

उत्तर : कविता में कवि ने अनेक स्थानों पर प्रकृति का मानवीकरण किया है जो निम्नलिखित है -

1. प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला ।
रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ में वारिद माला ॥

भाव : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बादलों को दर्शाया है जैसे

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कि रंगीन नर्तकियां सूर्य के सामने नृत्य करती हैं।

***2.** रत्नाकर गर्जन करता है ।*

भाव: प्रस्तुत पंक्ति में, समुद्र एक वीर की तरह दहाड़ता हुआ दिखाई देता है।

***3.** लाने को निज पुण्य भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।*
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण-सड़क अति प्यारी॥

भाव: इन पंक्तियों में, सूर्य के प्रकाश से बनी चौड़ी प्रकाश रेखा, लक्ष्मी के स्वागत के लिए बनाई गई सुनहरी सड़क के रूप में है।

***4.** सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।*
तट पर खड़ा गगन-गंगा के मधुर गीत गाता है॥

भाव : प्रस्तुत पंक्ति में, भगवान को मानवकृत करते हुए मधुर गीत गाने के लिए कहा गया है।

***5.** जब गंभीर तम अर्ध-निशा में जग को ढक लेता है।*
अन्तरिक्ष की छत पर तारों को छिटका देता है॥

भाव : पूरी दुनिया को अंधेरे से ढंककर और आसमान में तारे छिटकने के कारण लेखक ने प्रकृति को एक चित्रकार के रूप में वर्णित किया गया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. उससे ही विमुग्ध हो नभ में चन्द्र विहंस देता है।
वृक्ष विविध पत्तों-पुष्पों से तन को सज लेता है।
फूल सांस लेकर सुख की सानंद महक उठते हैं-

भाव : उपरोक्त पंक्तियों में प्रकृति के प्यार पर चाँद को हँसना, पेड़ों द्वारा खुद को फूलों से सजाकर उत्साह मनाना इत्यादि सब मानवीय प्रक्रिया को दर्शाते हैं।

PAGE 144, प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:1

5. समुद्र को देखकर आपके मन में क्या भाव उठते हैं? लगभग 200 शब्दों में लिखें।

उत्तर : समुद्र अथाह जल का आकाश लिए प्रतीत होता है। इसके अथाह जल की तरह इसके गर्भ में अथाह रहस्य उपस्थित है। समुद्र सदियों से जस का तस, स्थिर,शांत और अपने भीतर सहस्त्रों तूफ़ान दबाये हुए है। समुद्र विशालता और व्यापकता का एकमात्र उदहारण है। इसमें समाहित जीव-जंतु, वनस्पतियाँ और

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

रत्नों को बिलकुल गहरे तक जानने की इच्छा सबको रही है।

समुद्र का सबसे मनमोहक और अद्भुत दृश्य सूर्योदय और सूर्यास्त होता है। सुबह सूर्य लाल रंग के साथ ऊपर उठता है जैसे जैसे ऊपर उठता है वैसे वैसे समुद्र के जल का लाल रंग धीरे धीरे नीला होने लगता है। शाम को समुद्र का दृश्य और आकर्षक होता है। सूर्य समुद्र में उठती लहरों में धीरे धीरे डूबता जाता है। ये ईश्वरीय चित्रकला का अनूठा उदाहरण है। समुद्र की गर्जना शेर की गर्जना समान है। परन्तु उसके किनारे बैठने पर अलग तरह की शांति का आनंद होता है। चाँदनी रात में समुद्र लहरों का सौन्दर्य मादक होता है। समुद्र की ये सारी विशेषताए प्रेरित करती है कि सारे परेसानियों को अंदर रखने के बाद भी पूरी ताकत से दहाड़ने के लिए प्रेरित करती है। समुद्र की विशालता और स्थिरता सिखाता है कि अपने सारे ज्ञान और शक्तियों को बाद भी शांत रहना चाहिए और घमंड नहीं करना चाहिए।

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:2

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. प्रेम सत्य है , सुन्दर है - प्रेम के विभिन्न रूपों को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर परिचर्चा करें।

उत्तर:

कक्षा में अपने साथियो तथा शिक्षकों के साथ मिल कर सामूहिक चर्चा कीजिये तथ उपरोक्त विषयों पे हर विद्यार्थी की राय जानिए। इसके बाद सबके राय का विश्लेषण कीजिये।

11:1:13:प्रश्न - अभ्यास - कविता के आसपास:3

7. वर्तमान समय में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं - इस पर चर्चा करें और लिखें कि प्रकृति से जुड़े रहने के लिए क्या कर सकते हैं।

उत्तर: यह सत्य है कि वर्तमान समय में हम प्रकृति से दूर हो रहे हैं। जंगल जैसी प्राकृतिक सम्पदाओं का दोहन बहोत तेज़ी से किया जा रहा है। लोगो के बसने के लिए कंक्रीट के जंगलों को बनाते जा रहे है। रोजगार के लिए लोग शहर में आते हैं और छोटे घरों में रहते हैं। शहरों में रहने वाला व्यक्ति कभी भी प्रकृति के संपर्क में नहीं रह सकता। शहरों में धूप, छांव, बारिश,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ठंढ आदि का कोई आनंद नहीं है। यह स्थिति बहुत चिंताजनक है। प्रकृति से जुड़े रहने के लिए, हम निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं:

(क) विकास के नाम पर जितने जंगल या पेड़ काटे जाते है उनके स्थान उतने पेड़ लगाने चाहिए।

(ख) जहां तक संभव हो सड़क और रेल पटरियों के दोनों ओर पेड़-पौधे लगाएं।

(ग) शिक्षण संस्थानों, स्कूलों, कॉलेजों, आवासीय कॉलोनियों, औद्योगिक स्थलों आदि के खुले और खाली स्थानों पर पौधे लगाना।

(घ) वृक्षारोपण से संबंधित जन जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

(ङ) पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली वस्तुओं का उपयोग न करें।

(च) प्राकृतिक चीजों के उपयोग को वरीयता दें।

(छ) प्रकृति पर्यटन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in